वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 7 | शनिवार 6 मई 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

महंगाई से राहत देने का कार्य कर रही राज्य सरकार

रक्षा बंधन पर मिलेंगे स्मार्ट फोन, 252 करोड़ रुपए की लागत से तैयार एलीवेटेड रोड का किया लोकार्पण

अजमेर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि आमजन को महंगाई की मार से बचाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। राज्य में महंगाई राहत कैम्पों के माध्यम से 10 योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। गहलोत शुक्रवार को अजमेर में महंगाई राहत कैम्प के अवलोकन के दौरान जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार आमजन के उत्थान के लिए कृत संकल्प होकर कार्य कर रही है। उन्होंने केन्द्र सरकार से देशभर में सामाजिक सुरक्षा कानून लागू करने का आग्रह किया। गहलोत ने अजमेर में 252 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित एलीवेटेड रोड का लोकार्पण किया। इसमें पुरानी आरपीएससी से गांधी भवन के मध्य एक तरफा यातायात के लिए 2 लेन सड़क एवं मार्टिण्डल ब्रिज से आगरा गेट तक दो तरफा यातायात के लिए 4 लेन सड़क सहित कुल 2.89 कि.मी. लम्बाई की सड़क निर्मित की गई है। इस एलीवेटेड रोड से शहर के हजारों लोगों को प्रतिदिन यातायात की समस्या से निजात मिल सकेगी। ''मै देरी से आने के लिए माफी मांगता हूं। आपका प्यार और आशीर्वाद बना रहे, मैं आभार व्यक्त करता हूं। करीब चार घंटे से विजय लक्ष्मी पार्क में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का इंतजार करती जनता के बीच उन्होंने इन वाक्यों के साथ अपना सम्बोधन शुरू करते हुए कहा कि रक्षा बंधन से महिलाओं को स्मार्ट फोन देने की योजना शुरू की जाएगी और प्रदेश के सभी परिवारों को महंगाई राहत योजना से जोड़ा जाएगा। '' मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को शुक्रवार को विजय लक्ष्मी पार्क में दिन में एक बजे पहुंचने का कार्यक्रम तय था लेकिन वे शाम चार बजकर दस मिनट पर पहुंचे। इस कारण उन्होंने बड़े नरम शब्दों में माफी मांगी साथ ही उन्होंने लम्बा इंतजार करने के लिए जनता का आभार भी व्यक्त किया। इस मौके पर उन्होने कहा कि राजस्थान में महंगाई राहत कैम्पों के बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ सभी को मिल रहा है। उनका कहना था कि प्रदेश के हर परिवार का पंजीयन कराया जाएगा। इस तरह उन्होंने संकेत दिया कि जरूरत पडी तो घर घर पहुंच कर इस अभियान को पूरा किया जाएगा। गहलोत ने कहा कि रक्षा बंधन से प्रदेश की महिलाओं को स्मार्ट फोन देने की योजना को अमल में लाया जाएगा। जिसके अंतर्गत पहले चरण में 40 लाख स्मार्ट फोन दिए जाएंगे। जबकि एक करोड 35 लाख महिलाओं को स्मार्ट फोन दिए जाने की योजना है। सीएम गहलोत ने कहा कि सरकार मुख्य रूप से महंगाई पर नियंत्रण, बेरोजगारी दूर करने, अमीर गरीब की खाई पाटने व शिक्षा को बढावा देने के अभियान पर सक्रिय रूप से काम कर रही है। महंगाई के लिए राहत शिविर लगाए जा रहे है और पांच सौ रूपए में सिलेण्डर दिया जा रहा है यह योजना पूरे देश में केवल राजस्थान में शरू की गई है। युवाओं के लिए जॉब फेयर का आयोजन किया जा रहा है और पेन्शन राशि बढा दी गई है साथ ही ओल्ड पेन्शन स्कीम लागू कर दी गर्द है। स्कूलों में शिक्षा व यूनिफार्म निःशुल्क कर दी गई है। उन्होंने कहा कि सेवा ही धर्म है, सेवा ही कर्म है कि भावना से सरकार जनता को लाभ देने के लिए काम कर रही है। गहलोत ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कहा कि वे महंगाई राहत कैम्प में अपना सहयोग दें ओर अधिक से अधिक परिवारों का रजिस्ट्रेशन कराएं। गहलोत ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कहा कि राईट टू हैल्थ का नियम वे पूरे देश में लागू करे। क्योंकि राजस्थान सरकार की इस बेमिशाल योजना की सभी ने सराहना की है जो आम आदमी के लिए आवश्यक है।

राठौड़ साहब को पुष्कर से टिकट दें

मुख्यमंत्री से पुष्कर के स्थानीय निवासियों की मुलाकात हुई। जब उन्होंने पुष्कर विकास के लिए पांच सौ करोड़ की मंजूरी देने एवं ब्रह्मा मंदिर के विकास के लिए विशेष रूचि दिखाने पर मुख्यमंत्री का आभार माना। साथ ही यह भी कहा कि विधानसभा चुनाव में इन्हें यानि पास खड़े धमेन्द्र राठौड़ को टिकट दिया जाए यह ईमानदारी से काम करते हैं, सके अलावा सिंधी समाज के लोग भी उनसे मिले जिन्होंने सिंधु गगर बसाए जाने की मांग की।

टाइम पास करना हो गया मुश्किल

दोपहर एक बजे से जननायक मुख्यमंत्री गहलोत को सुनने के लिए श्रोता पंडाल मे आ गए थे। लेकिन चार घंटे का टाइम पास करना बहुत मुश्किल हो गया था। कभी देश भक्ति गीत चलाए गए तो कभी राहत योजनाओं की जानकारी दी गई तो नाटक पेश किया गया। इसी बीच आरटीडीसी के चेयरमैन धमेन्द्र राठौड़ को भी सम्बोधित करने का मोका मिला। मंच को शहर की राजनीति से दूर रखा गया क्योंकि यह प्रशासनिक मंच था।

खड़े होकर कैसे करेंगे गहलोत का स्वागत-राठौड़ ने कराई रिहर्सल

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के विजय लक्ष्मी पार्क में सभा को सम्बोधित करने के पहले पर्यटन विकास निगम के चेयरमैन धर्मेन्द्र सिंह राठौड़ ने इस बात की रिहर्सल करवा डाली कि जब मुख्यमंत्री गहलोत मंच पर आएंगे तो आप लोग कैसे खडे होकर तालियां बजाकर उनका स्वागत करेंगे। यह संभवतः पहला मौका है जब स्वागत तालियां बजाने के लिए इस तरह की रिहर्सल करवाई गई हो। मंच पर राठौड़ सम्बोधित करने के लिए आए तो उन्होंने खुद ही कहा कि जब मुख्यमंत्री मंच पर आएंगे तो आप लोग कैसे तालियां बजाकर उनका स्वागत करेंगे इसका रिहर्सल होना चाहिए। इस पर पंडाल में बैठी जनता खड़ी हो गई और तालियां बजाने लगी। इस तरह हो सकता है राठौड़ ने खुद के स्वागत का एहसास भी अपने आप को कराया होगा और आनन्दित भी हुए होंगे लेकिन ऐसा इससे पहले तालियों से स्वागत का रिहर्सल किसी भी सभा में आजतक नहीं किया गया। अपने सम्बोधन में राठौड़ ने सरकार की पुष्कर योजना पर पांच सौ करोड़ की मंजूरी का जिक्र किया और राज्य गहलोत सरकार की कई कल्याणकारी योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि 25 लाख का स्वास्थ्य बीमा देने वाला राजस्थान पूरे देश में पहला राज्य है।

संगिनी मेट्रो का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

नई टीम ने बंधुत्व से प्रेम एवं बंधुत्व के साथ सेवा की ली शपथ

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानव एवं समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की संस्था संगिनी फारम जेएसजी मेट्रो की नई कार्यकारिणी का सत्र 2023-25 के शपथ ग्रहण समारोह गोपाल पुरा बाईपास स्थित दी होटल ग्रान्ड सफारी में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस मौके पर अध्यक्ष अम्बिका सेठी, सचिव रेखा पाटनी, उपाध्यक्ष नीतू जैन मुल्तान, संयुक्त सचिव नीतू जैन श्योपुर एवं कोषाध्यक्ष दीपा गोधा एवं कार्यकारिणी सदस्याओं को मुख्य अतिथि समाजसेविका श्रीमती पुष्पा सोगानी ने बंधुत्व से प्रेम एवं बंधुत्व के साथ सेवा की शपथ दिलाई। साउथ इंडियन थीम बेस्ड यह प्रोग्राम दो सत्रों में आयोजित किया गया। प्रथम सत्र में दोपहर 12.30 से स्वागत रजिस्ट्रेशन के बाद संस्थापक अध्यक्ष श्रीमती दीपिका जैन कोटखावदा के नेतृत्व में विश्व शांति प्रदायक णमोकार महामंत्र का तीन बार सामूहिक रूप से उच्चारण करते हुए सभी सदस्याओं का पहले

प्रोग्राम में स्वागत करते हुए नई टीम का परिचय करवाया। तत्पश्चात अमिता साह एवं पारुल जैन के निर्देशन में मनोरंजक गेम्स एवं धमाल मस्ती का सभी सदस्याओं ने आनन्द लिया। निशा गंगवाल, नीतू जैन मुल्तान एवं अर्चना जैन द्वारा मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक बम्पर हाऊजी के साथ इस सत्र का समापन हुआ। दोपहर 3.00 बजे से दूसरे सत्र की शुरूआत अतिथियों एवं पदाधिकारियों को मंच आमंत्रण के बाद भगवान महावीर के चित्र के समक्ष अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुई। तत्पश्चात नीतू जैन श्योपुर एवं अर्चना जैन द्वारा मंगलाचरण के रूप में भव्य नृत्य प्रस्तुति दी गई। मुख्य अतिथि जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति की महामंत्री एवं प्रसिद्ध समाजसेविका एडवोकेट पुष्पा सोगानी एवं दीप प्रज्ज्वलनकर्ता युवा समाजसेविका शिवानी बावरी का तिलक, माल्यार्पण, पगड़ी, दुपट्टा पहनाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत व सम्मान किया। संस्थापक अध्यक्ष दीपिका जैन कोटखावदा ने स्वागत उदबोधन देते हुए संगिनी की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए सभी का एक बार पुनः स्वागत किया एवं नई टीम को पूर्ण सहयोग देने हेतु आश्वस्त करते हुए निवर्तमान अध्यक्ष मैना जैन एवं उनकी टीम द्वारा सन् 2019 से लगातार गेट टूगेदर प्रोग्रामों के साथ समय समय पर सेवा कार्य करने हेतु साधुवाद दिया । अध्यक्ष अम्बिका सेठी ने अपने पहले उदबोधन में वर्ष भर के प्रस्तावित सामाजिक,मानव सेवार्थ, धार्मिक एवं गेट टूगेदर प्रोग्रामों की जानकारी दी। गेम्स, हाऊजी आदि मे विजेताओं तथा लक्की ड्रा सहित अन्य प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। सचिव रेखा पाटनी ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन वर्षा अजमेरा ने किया।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप स्वस्तिक द्वारा गेट टू गेदर का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप स्वस्तिक द्वारा गेट टू गेदर का होटल राजमणि में भव्य आयोजन किया। अध्यक्ष सतीश बाकलीवाल ने स्वागत अभिवादन करते हुए कार्यक्रम में सम्मिलित होने पर सभी सदस्यों की आभार व्यक्त किया । सचिव अजीत बड़जात्या ने बताया कि सभी का संयोजक प्रदीप-बेला पाटनी एवं प्रदीप-संगीता सोनी द्वारा तिलक लगाकर स्वागत किया गया । संयोजकों द्वारा दीपप्रज्वलन करने के पश्चात कार्यक्रम का प्रारंभ मधु बाकलीवाल, शकुन बड़जात्या, रंजना बोहरा, संगीता सोनी द्वारा मंगलाचरण से किया गया। नए सदस्य अशोक-रजनी, सरोज- नलिनी, स्नेहलता, राजेश-नीता, राजेन्द्र-उषा का ग्रुप सदस्यों द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। फरवरी माह से अप्रैल तक के सदस्यों के जन्मदिन एवं वैवाहिक वर्षगाँठ वाले सदस्यों का भी स्वागत- सम्मान किया गया। ग्रुप की सदस्या कमलेश बाकलीवाल ने 29th National Masters Table Tenis championship2022-23 राजस्थान का प्रतिनिधित्व 65वर्ष से अधिक उम्र के ग्रुप में किया और क्वार्टर फाइनल तक पहुंच कर राजस्थान का नाम रोशन किया । श्रीमती कमलेश बाकलीवाल का स्वस्तिक ग्रुप के सदस्यों द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया तत्पश्चात बेला-संगीता द्वारा हाउजी के अलावा मनोरंजक गेम्स खिलवाये गए जिसका भरपूर आनंद सभी ने लिया । निदेशक अशोक-रश्मि जैन द्वारा सभी संयोजक,सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया ।

अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी के प्रवचन से

क्रोध के शिखर पर क्षमा की ध्वजा फहराना ही, पारसनाथ निर्वाण महोत्सव है..!

पारसनाथ भगवान अतीत के भव्य स्मारक नहीं, वरन वर्तमान के मार्ग दर्शक तथा भविष्य के प्रकाश स्तंभ है। पारसनाथ भगवान अमृत महापुरुष थे। उन्होंने पुरे जीवन में समाज को अमृत ही अमृत बांटा। पारसनाथ भगवान की क्षमा और मैत्री शाश्वत है। वे आकाश से अवतरित नहीं हुये थे। वे तीर्थंकर थे। तीर्थंकर मनुष्य के भीतर ईश्वर को तलाशते हैं, फिर तराशते हैं और अपने जैसा बना लेते हैं। क्योंकि जो कांटो से डरते हैं, वे गुलाब को प्राप्त नहीं कर सकते। क्रोध कांटा है और क्षमा गुलाब 'है। अहंकार के हिमालय से नीचे उतरे बिना मोक्ष सम्भव नहीं है। अहम नगर से जब हमारा जीवन अर्हम नगर बन जाये तो जीवन धन्यता आ जाती है। फिर जीवन में झुकना, सुनना और सहन करना सहज हो जाता है। अभी हम क्रोध करते हैं, बाद में पश्चाताप कर लेते हैं, कि मुझे क्रोध नहीं करना चाहिए। लेकिन जरा सा निमित्त मिलने पर हमारी क्रोध की भाषा, महाभारत की परिभाषा बन जाती है। यह क्रम जीवन भर चलता रहता है। अब पश्चाताप नहीं, प्रायश्चित करना है, क्रोध के परिणामों पर गहन विचार करना है। कषाय, कर्ज, शत्रु और रोग को जड़ से समाप्त करना है। कारण कि ये जरा भी रह जाये तो जीवन की उन्नति में बाधक बन जाते हैं। मानसिक विकारों से, ईर्ष्या-द्वेष से, घृणा और वैमनस्यता से मुक्त होना ही मोक्ष है। <u>नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद</u>

मुनिश्री का मुरेना में हुआ मंगल आगमन, भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ मंगल प्रवेश

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

मुरेना। जैन सन्त उपाध्याय श्री विशोकसागर जी महाराज ससंघ का मुरेना नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। बड़ा जैन मंदिर कमेटी के कोषाध्यक्ष राजकुमार जैन राजू ने जानकारी देते हुए बताया कि परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य प. पू. उपाध्याय श्री विशोकसागर जी महाराज एवं श्रमणमुनि श्री विनिबोध सागर जी महाराज ससंघ ग्वालियर से मंगल पद बिहार करते हुए मुरेना पधारे । मुरेना जैन समाज द्वारा पूज्य उपाध्याय संघ की भव्य अगवानी की गई । साधर्मी बन्धु पुलिस पेट्रोल पम्प पर एकत्रित हुए । वहां से मुनिश्री को बैंडबाजों के साथ भव्य शोभायात्रा के रूप में बड़े जैन मंदिर जी में प्रवेश कराया गया । बताया जाता है कि मुनिश्री का दिल्ली की ओर विहार चल रहा है । मुनिश्री के विहार में बड़ा जैन मन्दिर कमेटी के अध्यक्ष महेशचंद बंगाली, राजकुमार जैन, श्रमण संस्कृति न्यास के अध्यक्ष डॉ. मनोज जैन, सतेंद्र जैन खनेता, सुनीत जैन ठेकेदार, नवीन जैन चैटा, विमल जैन बघपुरा, नवल जैन वरहाना, सुनील जैन, आशीष जैन (तेजाब वाले) सहित अनेकों महानुभाव मौजूद थे ।

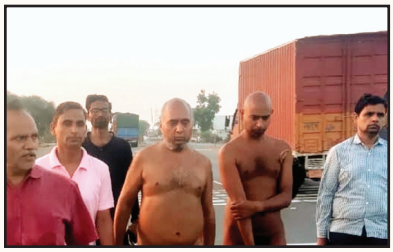

वेद ज्ञान

सर्वोत्तम स्थिती है आत्मनिर्भरता

कोई मनुष्य, समाज या देश अपने अस्तित्व की रक्षा और विकास के लिए किसी पर आश्रित न रहे, यह सर्वोत्तम स्थिति है। परमात्मा ने मनुष्य को पर्याप्त शक्तियां देकर संसार में भेजा है ताकि वह अपनी जीवन यात्रा अपने विवेक और निर्णयों से पूरी कर सके। मनुष्य चूंकि समाज में रह रहा है। इसलिए दूसरों के प्रति उसके अनेक कर्तव्य स्वाभाविक रूप से जन्म लेते हैं। इन कर्तव्यों के पालन में उसे कई बार अन्य का सहयोग लेना पड़ता है। अपने परिवार का पोषण करने के लिए खेती, व्यवसाय या नौकरी जो भी करें अपनी स्वतंत्रता का एक अंश खोना ही पड़ता है। समाज की परंपराओं, मान्यताओं को न चाहते हुए भी मानना अपने विवेक पर अंकुश लगा कर ही हो पाता है। यह एक तरह का अनुशासन और अनुशीलन है, जो व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक है। भौतिकता और उपभोक्तावाद ने मनुष्य की इच्छाएं सीमा से अधिक बढ़ा दी हैं। जितनी लंबी चादर उतने ही पैर पसारने की सोच को उपेक्षित कर दिया गया है। अब कोई चादर नहीं है। मनुष्य अधिक सोचे समझे बगैर पैर पसारता जा रहा है। दूसरों से आशाएं, अपेक्षाएं भी अधिक हो गई हैं। इसके लिए वह अपनी निजता को किसी भी सीमा तक दांव पर लगाने को तैयार हो जाता है। शक्तिशाली और सामर्थ्यवान शक्तियां इसका लाभ उठाकर व्यापक स्तर पर शोषण में सफल हो जाती हैं। समाज के उत्तम स्वास्थ्य के लिए स्वस्थ और विवेकपूर्ण सोच अत्यंत आवश्यक है। एक दूसरे पर आवश्यकता से अधिक आश्रित होने का ही परिणाम है कि अपराध बढ़ रहे हैं। समाज निर्बल और सबल में बंट गया है। आज कोई भी जहां भी है, अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं है। रूखी-सूखी खाकर ठंडा पानी पीने किन्तु अपनी अस्मिता को बचा कर रखने वाले अलभ्य हैं। अपमान सहकर भी कंचन की याचना करने वालों की भीड़ है। लोभ ने मानवीय मूल्यों को तार-तार कर दिया है। यह चर्चा तो भरपूर होती है कि सभ्यता का कितना अवमूल्यन हो गया है, पर आचार को नियमित करने वाले उन छोटे-छोटे सूत्रों की बात नहीं होती, जो निरंतर दूर होते गए हैं। भारतीय संस्कृति संभवतः इस परिप्रेक्ष्य में सबसे समृद्ध है।

संपादकीय

भारत में भी अब मौत की सजा के तरीके को लेकर बहस

समूची दुनिया में सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य ने जीवन और व्यवस्था को लगातार ज्यादा मानवीय बनाने की कोशिश की है। इस क्रम में न सिर्फ सामाजिकता से जुड़ी जीवनशैली और विचार-प्रक्रिया में संवेदनशीलता का स्तर बढ़ा, बल्कि व्यवस्था के भीतर परिभाषित अपराधों की सजा के मामले में भी क्रूरता के तत्त्वों को कम करने की कोशिशें हुईं। एक समय अगर सजा का कोई खास तरीका ज्यादा बेहतर माना गया, तो उसके स्वरूप पर भी विचार हुआ और दुनिया भर में उसमें बदलाव की गुंजाइशें खोजी हुईं। भारत में भी अब मौत की सजा के तरीके को लेकर बहस चल रही है और उसी क्रम में सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका पर सुनवाई हो रही है। अब तक इस सजा के लिए फांसी पर लटकाने को बेहतर तरीका माना गया था और सरकार का भी यही पक्ष था। लेकिन मार्च में शीर्ष अदालत ने सरकार को एक विशेषज्ञ समिति बना कर इस बारे में अध्ययन और जानकारी इकट्ठा करने के लिए कहा था। अब

केंद्र की ओर से सुप्रीम कोर्ट को बताया गया है कि वह इसके लिए एक समिति गठित करने के बारे में सोच रहा है, ताकि कानून के मुताबिक मौत की सजा देने के लिए कोई कम दर्दनाक तरीका खोजा जा सके। गौरतलब है कि यहां मौत की सजा देने के लिए फिलहाल फांसी पर लटकाने का प्रावधान है, जिसे मानवीयता के लिहाज से बेहद क्रूर तरीका माना जाता है। यों यहां किसी अपराध के 'दुर्लभ से दुर्लभतम मामले' में ही मौत की सजा घोषित की जाती है, लेकिन फैसले में यह कहा जाता है कि 'जब तक मौत न हो जाए, तब तक कैदी को फांसी पर लटकाया जाए।' इसके तहत फांसी के बाद भी सजा पाने वाले व्यक्ति को आधे घंटे तक लटकाए रखा जाता है। इसी प्रक्रिया को बहुत लंबी और अमानवीय बताते हुए याचिका में मांग की गई है कि अगर किसी दोषी को मृत्युदंड देना ही हो तो उसके लिए फांसी पर लटकाने के बजाय उसकी मृत्यु के लिए कोई अन्य तरीका अपनाया जाना चाहिए। इसके विकल्प में जहर का इंजेक्शन देने, गोली मारने या फिर विद्युत के करंट वाली कुर्सी पर बिठाने का तरीका बताया गया है। यों पिछले करीब साढ़े चार दशक के दौरान दुनिया के नब्बे से ज्यादा देशों ने सभी तरह के अपराधों के लिए मृत्युदंड को समाप्त कर दिया है। हालांकि कुछ देशों में अभी भी इस सजा का प्रावधान है। इस मसले पर भारत भी अब तक फांसी की सजा का पक्ष लेता रहा है। करीब चार महीने पहले संयुक्त राष्ट्र महासभा में जब एक सौ पच्चीस देशों ने मृत्युदंड पर रोक के पक्ष में मतदान किया था, तब भारत ने इसके खिलाफ वोट दिया था। इसी तरह, 2021 में भी मृत्युदंड पर रोक लगाने के लिए संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में लाए गए एक मसविदा प्रस्ताव का भी भारत ने समर्थन नहीं किया था। दरअसल, इस मसले पर दुनिया भर में लंबे समय से बहस होती रही है कि किसी अपराध के बदले क्या केवल मौत की सजा ही आखिरी विकल्प है। यह भी एक प्रश्न रहा है कि सजा का मकसद अगर सुधार या फिर दोषी को अपने अपराध के बारे में अहसास कराना है तो उसे मृत्युदंड देना क्या उस संभावना को खत्म कर देता है। -**राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

साइबर खतरा

पिछले कुछ सालों के दौरान समूची दुनिया में अमूमन हर क्षेत्र में डिजिटल गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया है। कोई भी व्यक्ति या समाज अपनी सामान्य दिनचर्या में मौजूदा दौर के किसी नई तकनीकी के भी इस्तेमाल को लेकर सहज हो जाता है तो इसके पीछे उसके जरिए कामकाज के सुरक्षित होने को लेकर आश्वस्ति का भाव होता है। बल्कि कई बार तकनीक के उपयोग को इसी दलील पर बढ़ावा दिया जाता है कि वह पुराने तौर-तरीकों के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित, पारदर्शी और सुविधाजनक है। लेकिन एक ताजा अध्ययन में बताया गया है कि आनलाइन गतिविधियों में धोखाधड़ी या ठगी के मामलों में जिस कदर बढ़ोतरी हो रही है और जल्दी इससे निपटने के प्रयास नहीं हुए तो आने वाले वक्त में डिजिटल दुनिया बहुत सारे लोगों के लिए एक परेशान करने वाला अनुभव साबित होगा। भारत में इंटरनेट आधारित कामकाज या अन्य गतिविधियों के अभी बहुत वक्त नहीं बीते हैं, लेकिन अभी ही जो तस्वीर उभर कर सामने आ रही है, वह चिंता पैदा करने के लिए काफी है। रिपोर्ट के मुताबिक पिछले तीन साल में करीब उनतालीस फीसद भारतीय परिवार आनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के शिकार हुए हैं। वैसे तमाम लोग हैं, जिन्हें एटीएम या डेबिट कार्ड या फिर क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल करते हुए ठग लिया गया। इसके अलावा, इंटरनेट आधारित कारोबार और बैंक खाते को लिंक कराने से लेकर अन्य कई अन्य तरीके से लोगों के साथ धोखाधड़ी हुई। यह स्थिति तब है जब भारत में अभी बहुत बड़ा क्षेत्र सारे काम के लिए आनलाइन पर पूरी तरह निर्भर नहीं हुआ है। आमतौर पर कोई भी तकनीक अपने आप में किसी काम को आसान बनाने का जरिया होती है। लेकिन किसी भी तकनीक का सुरक्षित होना इस बात पर निर्भर करता है कि उसका उपयोग करने वाला व्यक्ति उसके बारे में किस स्तर तक प्रशिक्षित है। पिछले कुछ सालों के दौरान समूची दुनिया में अमूमन हर क्षेत्र में डिजिटल गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया है। बल्कि कई जगहों पर तो इसके जरिए कोई काम कराना लगभग अनिवार्य बना दिया गया है। खुद सरकारी महकमों में सारे कामकाज को आनलाइन बनाने का प्रयास चल रहा है। लेकिन हकीकत यह है कि इंटरनेट के प्रसार के साथ-साथ ठगी, धोखाधड़ी जैसे अपराधों के पुराने तरीके भी बदल कर इसी मुताबिक नए हो रहे हैं। साइबर ठगों का एक नया संजाल खड़ा हो रहा है, जो स्मार्टफोन या कंप्यूटर जैसे इंटरनेट आधारित यंत्रों को हैक करके बड़े अपराधों को भी अंजाम दे रहा है। आए दिन ऐसी खबरें आती हैं जिसमें ठगी के लिए लोगों के मोबाइल पर संदेश भेजा जाता है या उन्हें उलझाने वाली बात की जाती है। अगर वे इस जाल में फंस कर कोई पासवर्ड या पिन नंबर आदि साझा करने लगते हैं तो कुछ ही देर में उनके बैंक खाते से पैसे गायब हो जाते हैं। आधार कार्ड जैसे संवेदनशील दस्तावेज का ब्योरा जिस तरह बिना हिचक हर जगह दे दिया जाता है, उसके कई खतरे हैं। फिर ऐसी वेबसाइटें भी हैं, जो खरीदारी के नाम पर उपभोक्ता से पैसे तो ले लेती हैं, मगर उन्हें सामान नहीं मुहैया कराया जाता या फिर खराब उत्पाद भेज दिया जाता है। इसके अलावा, अन्य तरह की कुछ अवांछित गतिविधियां भी हैं, जिनमें उलझा कर पैसे ठग लिए जाते हैं या निजता में घुसपैठ कर भयादोहन किया जाता है।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर महावीर नगर में लगातार 16 दिन तक हुआ शांति विधान-पूजा विधान

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर महावीर नगर में लगातार 16 दिन तक शांति विधान पूजा का आयोजन हुआ। राजेश गंगवाल ने बताया कि वैशाख शुक्ला एकम से पूनम तक मन्दिर में भक्ति भाव से 16 दिन तक नित्य शान्ति विधान पूजा अर्चना की गई। शास्त्रों में उल्लेख है कि यदि किसी पखवाड़े में 15 की जगह 16 दिन का पखवाड़ा होता है तो शांति विधान पूजा करने से अतिशय पुण्य का बंध होता है। पूजा संघ की मंजु बडजात्या ने बताया कि इस भव्य आयोजन में महावीर नगर महिला पूजा संघ की 50 से भी अधिक सदस्यों के साथ साथ अशोक गोदिका, रमेश भौंच व राजेश गंगवाल ने उपस्थित रह कर धर्म लाभ प्राप्त किया।

सामाजिक सरोकार के क्षेत्र में दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के बढ़ते कदम...

रेल यात्रियों के लिए नि:शुल्क शीतल जल मंदिर का विधिवत उद्घाटन कर यात्रियों को शरबत पिलाकर जल सेवा की शुरूआत की

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया

भीषण गर्मी के अंदर गर्मी से बेहाल रेल यात्रियों के लिए शीतल जल उपलब्ध कराकर राहत प्रदान करना बहुत पुण्य का कार्य है। यह बात आज दिगंबर जैन सोशल ग्रुप द्वारा रेलवे स्टेशन पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रेल यात्रियों के लिए की जाने वाली जल सेवा एवं जल मंदिर के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित अतिथि वर्धमान हॉस्पिटल के निदेशक डॉक्टर मनोज जैन, रेलवे के सहायक मंडल इंजीनियर अनिल कुमार जैन, समाजसेवी एवं गहलोत ट्रैक्टर्स के निदेशक सीएल सैनी ने उपस्थित कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कही। आज बुद्ध पूर्णिमा एवं पीपल पूनम के पावन अवसर पर दिगंबर जैन सोशल ग्रुप गंगापुर सिटी द्वारा सामाजिक सरोकार के क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाते हुए रेल यात्रियों के लिए लगातार तीन माह तक चलने वाली निशुल्क जलसेवा प्रारंभ की। इस अवसर पर जल मंदिर का विधिवत उद्घाटन अतिथियों द्वारा फीता काटकर एवं भगवान महावीर की छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर एवं महामंत्र नवकार की उच्चारण के साथ किया। स्वर्ण मंदिर मेल पर रेल यात्रियों के लिए शीतल जल एवं शरबत पिलाकर जल सेवा की शुरूआत की गई। उद्घाटन अवसर पर जल सेवा के लिए ट्रालियां उपलब्ध कराने वाले भामाशाह पांड्या परिवार का माला पहना कर सम्मान किया गया। जलसेवा के संयोजक नरेंद्र जैन नृपत्या ने बताया कि दिगंबर जैन सोशल ग्रुप द्वारा गत 12 वर्षों से रेल यात्रियों के लिए निशुल्क जलसेवा चलाई जा रही है। दिल्ली-मुंबई मार्ग पर यह जलसेवा बहुत प्रसिद्ध है। उल्लेखनीय है कि शाम के समय दिगंबर जैन सोशल ग्रुप से जुड़े हुए दर्जनों कार्यकर्ता एवं समाजसेवी जिसमें महिला पुरुष बच्चे शामिल है रेलवे स्टेशन पर आकर यात्री गाड़ियों पर चलित ट्रालियों के माध्यम से शीतल जल पिलाकर उनकी प्यास हो बुझाते हैं। आज जलसेवा के उद्घाटन के दौरान उपस्थित अतिथियों एवं पदाधिकारियों का माला साफा दुपट्टा पहनाकर एवं तिलक लगाकर स्वागत सम्मान किया गया। इस अवसर पर ग्रुप के अध्यक्ष विमल जैन गोधा महामंत्री डॉ मनोज जैन ग्रुप पदाधिकारी पंकज जैन पांड्या प्रवीण जैन कठूमर मंगल जैन पूर्व अध्यक्ष देवेंद्र पांड्या, प्रवीण गंगवाल, प्रेमचंद जैन,नरेंद्र जैन नृपत्या, मोनिका जैन, भावना जैन, ममता पांड्या, शालिनी जैन,स्वीटी जैन, विद्या जैन गोधा, मधु पांड्या, धर्मेंद्र पांड्या, राजेंद्र गंगवाल, अभिनंदन जैन, चांदमल जैन, जगदीश जैन, योगेंद्र जैन, चिराग जैन, आलोक कबाड़ी, सुभाष सोगानी, विजेंद्र कासलीवाल, के के जैन, डॉ मानव जैन, राजेंद्र गंगवाल, राजेश जैन गंगवाल, श्वेतांबर जैन समाज के अध्यक्ष रितेश पालीवाल, मोनू जैन सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

नव मन्दिर निर्माण जीवन का श्रेष्ठ कार्य : आचार्य सोमेन्द्र

नव निर्मित मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न।

जयपुर. शाबाश इंडिया। जामडोली क्षेत्र में नव निर्माण मन्दिर में भगवान श्रीराम, हनुमान, शिवजी, गणेश जी, दुर्गा माता, परसुराम भगवान व अन्य भगवानों की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पंच खण्ड पीठाधीश्वर आचार्य श्री सोमेन्द्र जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि नव मन्दिर निर्माण व भगवानों की प्राण प्रतिष्ठा करवाना जीवन का श्रेष्ठ कार्य है जो परिवार के पूर्णादय से ही सम्पन्न हो पाता है। इस अवसर पर मन्दिर जी के मुख्य प्रणेता व निर्माण पुर्णाजक नरेन्द्र उपाध्याय, प्रसिद्ध समाजसेवी ने आचार्य सोमेन्द्र महाराज, गलता पीठाधीश्वर आचार्य अवधेश महाराज व पधारे हुए अन्य संतों का शाल, माला, दुपट्टा पहनाकर अभिनन्दन एवं स्वागत किया एवं आशीर्वाद प्राप्त किया । आस पास के क्षेत्र वासियों के लिए ये मन्दिर दैनिक दर्शन, आरती, पूजा व धार्मिक आयोजनों के लिए उपलब्ध रहेगा। संयोजक व राजस्थान पब्लिक ट्रस्ट, देव स्थान विभाग, राजस्थान सरकार के सदस्य बसन्त जैन बैराठी ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में समाज कल्याण बोर्ड, राजस्थान सरकार की अध्यक्षा डा. अर्चना शर्मा, पूर्व मेयर अशोक परनामी, भारतीय जैन संघटना के अध्यक्ष शरद कांकरिया, सचिव यश बापना, पक्की भायली फाउंडेशन की फाउण्डर सोनू अग्रवाल, भाग्य फाउण्डेशन की संरक्षिका निर्मला जैन बैराठी, प्रसिद्ध समाजसेवी राजीव जैन पाण्ड्या, महानगर समाचार पत्रिका के प्रधान सम्पादक गोपाल शर्मा, दी दिवास क्लब की अध्यक्षा कीर्ति शर्मा, साकार महिला संस्थान की अध्यक्षा निशा पारीक, श्रृष्टि क्लब की अध्यक्षा मधु सोनी एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं से पधारें हुए अतिथिगणों का स्वागत किया गया। समाज कल्याण बोर्ड, राजस्थान सरकार की अध्यक्षा डा. अर्चना शर्मा ने इस धार्मिक अवसर पर आमंत्रित करने पर उपाध्याय परिवार का आभार प्रकट किया। इस पुण्य कार्य के लिए अपनी शुभ कामनाएं प्रेषित की।

फांसी क्रूरतम, मृत्युदंड का स्वरूप बदले

विजय कुमार जैन राघौगढ़. शाबाश इंडिया

भारत में जघन्य अपराध करने वालों को फांसी की सजा देकर मृत्युदंड देने का प्रावधान है ऐसे क्रूर अपराधियों को भारत में गले में फंदा डालकर फांसी की सजा देने का प्रावधान कब से है इसका कोई सुनिश्चित इतिहास नहीं है। वर्तमान में भारत में फांसी के अलावा मृत्युदंड के अन्य तरीकों पर विचार करने के लिए एक वकील द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर की है। इस जन हित याचिका पर विचार चल रहा है। जनहित याचिका में फांसी को दर्दनाक एवं क्रूर बताया है वरिष्ठ अभिभाषक ऋषि मल्होत्रा ने सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका दाखिल कर रखी है। जिसमें फांसी के जरिए मृत्युदंड को ज्यादा दर्दनाक और क्रूर बताते हुए अन्य विकल्पों जैसे घातक इंजेक्शन, गोली मारने आदि विकल्पों को मृत्युदंड के लिये अपनाने के आदेश जारी करने का आग्रह देश की सर्वोच्च न्यायालय से किया है।

इस जनहित याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय में चल रही सुनवाई के दौरान भारत के अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमन ने कहा कि केंद्र सरकार फांसी के जरिए मृत्युदंड के अलावा अन्य विकल्पों पर विचार के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने पर मंथन कर रही है।

प्रस्तावित समिति के लिए नामों को अंतिम रूप देने की एक प्रक्रिया है। इसमें कुछ समय लगेगा न्यायालय ने अटॉर्नी जनरल के बयान को रिकॉर्ड में लेते हुए अगली सुनवाई जुलाई तक के लिए टाल दी। सर्वोच्च न्यायालय ने इस जनहित याचिका पर 21 मार्च को विचार करते हुए केंद्र सरकार से कहा था, फांसी की सजा देने के तरीके पर हुए अध्ययनों आदि के बारे में सरकार ने क्या किया है। गत मंगलवार को मामला फिर से प्रधान न्यायाधीश पी वाई चंद्रचूड़ और जस्टिस जे बी पाणीवाला की पीठ के समक्ष सुनवाई पर लगा था। सुप्रीम कोर्ट ने 21 मार्च को इस बात पर विचार का मन बनाते हुए पूछा था कि क्या मौत की सजा का फांसी के अलावा कम दर्दनाक और अधिक मानवीय तरीका हो सकता है? कोर्ट ने इस पर विचार के लिए विशेषज्ञ समिति भी गठित करने के संकेत दिए थे। सर्वोच्च न्यायालय ने इस जनहित याचिका पर भारत सरकार से जानना चाहा है क्या फांसी के जरिए मौत की सजा देने से होने वाली तकलीफों के बारे में कोई अध्ययन हुआ है? क्या इस बारे में कोई वैज्ञानिक डाटा उपलब्ध है कि इसमें कितनी तकलीफ होती है और मौत होने में कितना समय लगता है? क्या ऐसा कोई वैज्ञानिक सुझाव है की आज की तिथि में सबसे बेहतर तरीका है या फिर मानवीय गरिमा को कायम रखने वाला कोई और उपाय ज्यादा उपयोगी हो सकता है? फांसी के माध्यम से मृत्युदंड देने की सजा पर इसकी अंतर्राष्ट्रीय चलन से तुलना भी होना चाहिए। गंभीर अपराध करने वाले क्रूर अपराधी जिन को मृत्युदंड की सजा न्यायालय ने सुनाई है उन्हें फांसी के माध्यम से मृत्युदंड देने का प्रावधान है। सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन जनहित याचिका पर अवश्य विचार होगा, और मृत्युदंड देने के लिए फांसी को अधिकतम अमाननीय मानकर अपराधियों को अन्य विकल्पों पर विचार होगा, और निर्णय भी होगा। भारत के संविधान में तीन प्रमुख व्यवस्थायें हैं व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका। न्यायपालिका को सर्वोच्च स्थान दिया है। भारत का हर नागरिक संविधान का अनुशरण करते हुए न्यायपालिका का सम्मान करता है। न्यायपालिका की कार्यप्रणाली पर उंगली उठाने पर न्यायालय की मानहानि का प्रकरण दर्ज होता है और उसमें सजा का प्रावधान है। हम न्यायालय का सम्मान करते हैं। मगर कुछ पहलू ऐसे हैं जिन पर भारत सरकार, राज्य सरकारों एवं न्यायपालिका को गंभीरता से विचार करना चाहिए। देश की आजादी के बाद भारत में अपराध तीव्र गति से बड़े हैं। माफियाओं का साम्राज्य जेलों से भी संचालित होता है। हाल ही में ऐसे अनेक समाचार सुनने एवं देखने में मिले हैं की देश की बड़ी-बड़ी जेलों में गुंडे एवं माफिया अपना साम्राज्य चलाते हैं। जेलों में उन्हें वे सब सुविधाएं उपलब्ध हो जाती हैं जो उनके घर पर रहती हैं। गंभीर अपराधी जिनके प्रकरण न्यायालयों में विचाराधीन है, जिन्हें न्यायालय से जमानत नहीं मिलती है। वह

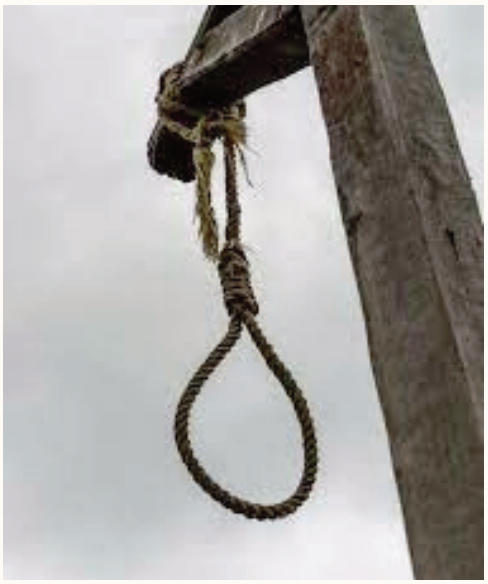

विचाराधीन कैदी लम्बे समय तक जेल में रहते है और जेल से ही अपनी गतिविधियों को संचालित करते हैं। देश में मृत्युदंड की सजा कम जब होगी तब अपराधों में कमी आयेगी। आज आवश्यकता है अपराध रोकना।यह सरकारों की उच्च प्राथमिकता होना चाहिए। देश के आम जन की प्रमुख चिंता यह है कि विभिन्न राजनैतिक दल अपराधियों को खुलकर संरक्षण देते हैं। खूंखार आतंकवादी जेलों में कैद रहकर चुनाव लड़ते है और सांसद, विधायक चुन जाते है। भारत के संविधान में यह संशोधन किया जाने की आवश्यकता है कि विचाराधीन कैदी जिसे सजा नहीं हुई वह जेल में बंद है उसे चुनाव लड़ने की पात्रता नहीं होगी। भारतीय न्याय प्रणाली में यह भी विचारणीय बिंदु है कि विचाराधीन कैदी वर्षों तक जेलों में बंद रहते हैं। उनके प्रकरणों में न्याय लंबित रहता है। क्रूर तम अपराधी ने जिसके परिवार जन की अमानवीय हत्या की है वह अपराधी वर्षों तक जेल में विचाराधीन कैदी रहता है पीड़ित परिवार अपराधी को सजा मिलने के इंतजार में दुखी होता रहता है। अपराधी को जघन्य अपराध की सजा शीघ्र दी जाये। इस संबंध में भारत की सर्वोच्च न्यायालय को विचार करना चाहिए। हम सबका प्रयास होना चाहिए कि भारत में इतने जघन्य अपराध न हों जिनमें फांसी या मृत्युदंड का प्रावधान है।

नोटः-लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष है।

भारतीय जैन मिलन; अजमेर की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

अजमेर. शाबाश इंडिया

भारतीय जैन मिलन ,अजमेर की आगामी वित्तीय वर्ष 2023-24कीनई कार्यकारिणी के चुनाव गत मीटिंग में सम्पन्न हुए थे, जिसका शपथ ग्रहण कार्यक्रम एक सादे समारोह में आयोजित हुआ। बी के कौल नगर स्थित मणि पुन्ज में क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश जैन पाटनी ने सम्पत सिंह कुम्मट को अध्यक्ष, प्रेम कुमार जैन को सचिव , पारस मल जैन हि'गड को कोषाध्यक्ष, अशोक कुमार नाहर को उपाध्यक्ष तथा कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में अभय मल सकलेचा, सुनील कुमार जैन छाजेड, राजेन्द्र कुमार जैन पाटनी को शपथ दिलाई गईं। इसके साथ ही अजमेर से राजस्थान प्रदेश स्तरीय नव मनोनीत कार्य कारिणी के पदाधिकारियों के रूप में अध्यक्ष प्रकाश जैन पाटनी , कार्य कारी अध्यक्ष मदन लाल बाफना, उपाध्यक्ष पी,सी जैन

गंगवाल, सदस्य पदम चन्द जैन खटोड का भी स्थानीय पदाधिकारियों दवारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। भारतीय जैन मिलन के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश जैन पाटनी ने इस अवसर पर आगामी दिनांक 2 मई को भारतीय जैन मिलन संस्था के 58 वे' स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न सेवा कार्यक्रम आयोजित किये जाने का आव्हान किया जिस पर विभिन्न सदस्यों ने पक्षियों के लिए परिण्डा वितरण; गायों के लिए गौशाला में चारा खिलाने; पक्षियों के लिए दाना; जे,एल एन 'हॉस्पिटल के बाहर इन्दिरा रसोई के माध्यम से गरीबों को निः शुल्क भोजन वितरण के कार्य हाथ में लेकर सेवा सप्ताह मनाने की सहमति प्रदान की। संस्था मे जुड़ने वाले नये सदस्य मदन लाल जैन गदिया;मुकेश पाण्डया विजय कुमार जैन पोखरणाः महेंद्र जैन काला धीरेन्द्र जैन ललित कुमार क्वाड सज्जन राज जैन काठेड का माल्यार्पणकर स्वागत किया गया। मीटिंग में जिनेश सोगाणी, रविन्द्र कुमार जैन महिला विंग की अध्यक्ष श्री तमा जैन,सचिव अलकेश जैन,रेखा जैन शान्ता काला ,मोनिका लोढा,कुसुम लता जैन, बीना, सरोज पाण्डया आदि उपस्थित रहे।

पुराणों के अनुसार कौन सी वनस्पति संजीवनी बूटी मानी जाती है?

शाबाश इंडिया। शुक्राचार्य को मृत संजीवनी विद्या याद थी जिसके दम पर वे युद्ध में मारे गए दैत्यों को फिर से जीवित कर देते थे। इस विद्या को सीखने के लिए गुरु बृहस्पति ने अपने एक शिष्य को शुक्राचार्य का शिष्य बनने के लिए भेजा। उसने यह विद्या सीख ली थी लेकिन शुक्राचार्य और उनके दैत्यों को इसका जब पता चला तो उन्होंने उसका वध कर दिया। रामायण में उल्लेख मिलता है कि जब राम-रावण युद्ध में मेघनाथ आदि के भयंकर अस्त्र प्रयोग से समूची राम सेना मरणासन्न हो गई थी, तब हनुमानजी ने जामवंत के कहने पर वैद्यराज सुषेण को बुलाया और फिर सुषेण ने कहा कि आप द्रोणगिरि पर्वत पर जाकर 4 वनस्पतियां लाएं : मृत संजीवनी (मरे हुए को जिलाने वाली), विशाल्यकरणी (तीर निकालने वाली), संधानकरणी (त्वचा को स्वस्थ करने वाली) तथा सवर्ण्यकरणी (त्वचा का रंग बहाल करने वाली)। हनुमान बेशुमार वनस्पतियों में से इन्हें पहचान नहीं पाए, तो पूरा पर्वत ही उठा लाए। इस प्रकार लक्ष्मण को मृत्यु के मुख से खींचकर जीवनदान दिया गया। इन 4 वनस्पतियों में से मृत संजीवनी (या सिर्फ संजीवनी कहें) सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बारे में कहा जाता है कि यह व्यक्ति को मृत्युशैया से पुनः स्वस्थ कर सकती है। सवाल यह है कि यह चमत्कारिक पौधा कौन-सा है! इस बारे में कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलुरु और वानिकी महाविद्यालय, सिरसी के डॉ. केएन गणेशैया, डॉ. आर. वासुदेव तथा डॉ. आर. उमाशंकर ने बेहद व्यवस्थित ढंग से इस पर शोध कर 2 पौधों को चिह्नित किया है। उन्होंने सबसे पहले तो भारतभर में विभिन्न भाषाओं और बोलियों में उपलब्ध रामायण के सारे संस्करणों को देखा कि क्या इन सबमें ऐसे पौधे का जिक्र मिलता है जिसका नाम संजीवनी या इससे मिलता-जुलता हो। उन्होंने भारतीय जैव अनुसंधान डेटाबेस लायब्रेरी में 80 भाषाओं व बोलियों में अधिकांश भारतीय पौधों के बोलचाल के नामों की खोज की। उन्होंने संजीवनी या उसके पर्यायवाचियों और मिलते-जुलते शब्दों की खोज की। नतीजा? खोज में 17 प्रजातियों के नाम सामने आए। जब विभिन्न भाषाओं में इन शब्दों के उपयोग की तुलना की गई, तो मात्र 6 प्रजातियां शेष रह गईं। **इन 6 में से भी 3 प्रजातियां ऐसी थीं, जो संजीवनी या उससे मिलते-जुलते शब्द से सर्वाधिक बार और सबसे ज्यादा एकरूपता से मेल खाती थी** : क्रेसा क्रेटिका, सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस और डेस्मोट्रायकम फिम्ब्रिएटम। इनके सामान्य नाम क्रमशः रुदन्ती, संजीवनी बूटी और जीवका हैं। इन्हीं में से एक का चुनाव करना था। अगला सवाल यह था कि इनमें से कौन-सी पर्वतीय इलाके में पाई जाती है, जहां हनुमान ने इसे तलाशा होगा। क्रेसा क्रेटिका नहीं हो सकती, क्योंकि यह दखन के पठार या नीची भूमि में पाई जाती है। **अब शेष बची 2 वनस्पतियां** : अब शोधकर्ताओं ने सोचा कि वे कौन-से मापदंड रहे होंगे जिनका उपयोग रामायण काल के चिकित्सक औषधीय तत्व के रूप में करते होंगे। प्राचीन भारतीय पारंपरिक चिकित्सक इस सिद्धांत पर अमल करते थे कि जिस पौधे की बनावट प्रभावित अंग या शरीर के समान हो, वह उससे संबंधित रोग का उपचार कर सकता है। सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस कई महीनों तक एकदम सूखी या मृत पड़ी रहती है और एक बारिश आते ही पुनर्जीवित हो उठती है। डॉ. एनके शाह, डॉ. शर्मिष्ठा बनर्जी और सैयद हुसैन ने इस पर कुछ प्रयोग किए हैं और पाया है कि इसमें कुछ ऐसे अणु पाए जाते हैं, जो ऑक्सीकारक क्षति व पराबैंगनी क्षति से चूहों और कीटों की कोशिकाओं की रक्षा करते हैं तथा उनकी मरम्मत में मदद करते हैं। तो क्या सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस ही रामायण काल की संजीवनी बूटी है। सच्चे वैज्ञानिकों की भांति गणेशैया व उनके साथी जल्दबाजी में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहते। उनका कहना है कि दूसरे पौधे डेस्मोट्रायकम फिम्ब्रिएटम का दावा भी कमतर नहीं है। अब इन दो प्रजातियों के बीच फैसला करने के लिए और शोध की जरूरत है। इसके संपन्न होते ही रामायणकालीन संजीवनी बूटी शायद हमारे सामने होगी। **एक अन्य खोज:** भारतीय वैज्ञानिकों ने हिमालय के ऊपरी इलाके में एक अनोखे पौधे की खोज की है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह पौधा एक ऐसी औषधि के रूप में काम करता है, जो हमारे इम्यून सिस्टम को रेग्युलेट करता है। हमारे शरीर को पर्वतीय परिस्थितियों के अनुरूप ढलने में मदद करता है और हमें रेडियो एक्टिविटी से भी बचाता है। यह खोज सोचने पर मजबूर करती है कि क्या रामायण की कहानी में लक्ष्मण की जान बचाने वाली जिस संजीवनी बूटी का जिक्र किया गया है, वह हमें मिल गई है? रोडिओला नाम की यह बूटी ठंडे और ऊंचे वातावरण में मिलती है। लद्दाख में स्थानीय लोग इसे सोलो के नाम से जानते हैं। अब तक रोडिओला के उपयोगों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। स्थानीय लोग इसके पत्तों का उपयोग सब्जी के रूप में करते आए हैं। लेह स्थित डिफेंस इंस्टिट्यूट ऑफ हाई एल्टिट्यूड इस पौधे के चिकित्सकीय उपयोगों की खोज कर रहा है। यह सियाचिन जैसी कठिन परिस्थितियों में तैनात सैनिकों के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है।यह 21 वीं सदी की महत्वपूर्ण रिसर्च मानी गई है।

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर। 9828011871

विख्यात कलाविद जैन कमल ने दी लाडनूं जैन समाज में प्रस्तुति

लाडनूं. शाबाश इंडिया

विख्यात प्रिंट मिडिया डिजाइनर, रिसर्चर, पेंटर, फॉट आर्टिस्ट, जैन कमल ने स्थानीय जैन बड़ा मंदिर में अपने कृतित्व की प्रस्तुति दी। जैन समाज के सदस्य राज पाटनी ने बताया कि जैन कमल वर्षों से देश के शीर्ष मिडिया संस्थानों से जुड़े हुए हैं वे केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के सदस्य भी रहे हैं। णमोकार मंत्र तथा जैनिज्म के अन्य विषयों पर आधारित उनकी अनुपम पेंटिंग्स व कलाकृतियों का देश-विदेश के अनेक उच्च मंचों पर प्रदर्शन व सम्मान होता रहा है। कार्यक्रम के दौरान जैन कमल ने बताया कि णमोकार तथा जैनिज्म के अन्य विषयों पर आधारित उनकी पेंटिंग्स का अगर गहनता से साक्षात्कार किया जाये तो आप को कलाकृति में मंदिर या चैत्यालय के दर्शन होने लगते हैं । णमोकार महामंत्र की पेंटिंग अक्षर के माध्यम से बनी है और अक्षर से ब्रह्म को पाने की और णमोकार मंत्र के सौंदर्य को प्रकट करने की कोशिश की गई है। राज पाटनी ने बताया कि जैन कमल की किसी भी कलाकृति पर अगर आप ध्यान लगायें तो वह आप को सृष्टि से जोड़ देगी उसमें एक एक बिंदु शब्द व रंग में आप को चैतनता नजर आयेगी वह बिजली सा प्रभाव छोड़ने लगेगी तथा मंत्रबद्ध कर देगी। जैन कमल ने उपस्थित श्रावकों से कहा कि आप परम सौभाग्यशाली है कि लाडनूं की जैन समाज में आप का जन्म हुआ है और आप को यहां के भव्य जिनालयों, भगवान शांतिनाथ की चित्ताकर्षक व शांत तथा सौम्य प्रतिमा व मां सरस्वती की अनुपम छवि का पावन सान्निध्य व आशीर्वाद मिल रहा है।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com